International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(5): 147-152

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(5): 147-152
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 22-06-2022
Accepted: 24-07-2022

जिनगर चंचलबेन चांदमलभाई
संस्कृत विभाग,
विश्वविद्यालय सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
जिनगर चंचलबेन चांदमलभाई
संस्कृत विभाग,
विश्वविद्यालय सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान, भारत

ज्योतिष में होराशास्त्र परम्परा

जिनगर चंचलबेन चांदमलभाई

प्रस्तावना

ज्योतिषशास्त्र का व्युत्पत्यर्थ

वेदांग ज्योतिष में ज्योतिष को वेदांगो में सर्वोत्तम कहा गया है। मयूर की शिखा एवं नागों की मणियों के समान समग्र वेदांगो में इसे मूर्धन्य माना गया है। ज्योतिष यज्ञ प्रधान होने के कारण कालादिपरिज्ञान के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माना गया। पाणिनीय शिक्षा में ज्योतिष को वेद चक्षु माना गया है। चक्षु का अर्थ प्रकाशक, आलोकित, करने वाला आदि। इस प्रकार ज्योतिष वेदार्थ का प्रकाशक तो है ही कलादि तथ्यों को विशेष रूप में निरुपित करता है।[1]

ज्योतिषशास्त्र की व्युत्त्पति 'ज्योतिषांसूर्यादिग्रहाणांबोधकंशास्त्रम्' इसमें मुख्यतः ग्रह, नक्षत्र, घूमकेतु आदि ज्योतिःपदार्थो का स्वरूप, संचार, परिभ्रमणकाल, ग्रहण और स्थिति प्रभृति समस्त घटनाओं का निरुपण एवं ग्रह, नक्षत्रों की गति, स्थिति और संचारानुसार शुभाशुभ फलों का कथन किया जाता है। जिस शास्त्र में ज्योतिविद्या का सांगोपांग वर्णन रहता हैं, वह ज्योतिषशास्त्र है। भारतीय ज्योतिष की परिभाषा के स्कन्दत्रय सिद्धांत, होरा, और संहिता के रूप में ग्रहण किया गया। परन्तु इस युग के मध्य में इस परिभाषा में और भी संशोधन देखे और आगे जाकर यह पंचरूपात्मक अथवा स्कन्धपंच - सिद्धान्त, होरा, संहिता, प्रश्न और शकुन ये अंग माने गये हैं। [2]

होरा

होरा का अर्थ है एक घंटा होराशास्त्र कर्म एवं पूनर्जन्म के सिद्धातों से सम्बन्धित है। होराशास्त्र बताता है कि कुण्डली एक नक्सा या योजना मात्र है जो पूर्वजन्म में किए गए कर्म से उत्पन्न किसी व्यक्ति के जीवन के भविष्य की और निर्देश करती है।

[1] ज्योतिष पृ सं- 2

[2] भारतीय ज्योतिष पृ. सं- 5

होराशास्त्र ऐसा नहि कहता किव्यक्ति की कुण्डली उसे यह या वह करने के लिए बाध्य करते हैं, बल्कि कुण्डली केवल यह बताती हैं कि व्यक्ति का भविष्य किन दिशाओं की और उन्मुख है।होराशास्त्र से जातक की धन सम्पदा सुख सुविधा के विषय में विचार किया जाता है सम्पत्ति का विचार भी होरा लग्न से होता है, राशि, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, षोडशवर्ग, ग्रहो के दिग्बल, कालबल, चेष्टा बल, दृष्टिबल, ग्रहो के कारकत्व, योग, अष्टवर्ग, आयु, विवाह योग, मृत्युप्रश्न, एवं ज्योतिष के फलित नियम होरा शास्त्र के अंतर्गत आते है। सारावली नामक ग्रन्थ में लिखा है कि-

आद्यन्तवर्णलोपाद्होराशास्त्रंभवत्यहो रात्रात्।
तत्प्रतिबद्धःसर्वे
ग्रहभगणाश्चिन्त्यतेयस्मात्॥[3]

बृहज्जातक में भी लिखा है -

होरेत्यहोरात्रविकल्पमेके
वाञ्छन्तिपूर्वापरवर्णलोपात्।
कमोजितंपूर्वभवेसदादि
यत्तस्यपंक्तिंसमभिव्यनक्ति॥[4]

इसका दूसरा नाम जातकशास्त्र हैं। इसकी उत्पत्ति 'अहोरात्र' आदिशब्द 'अ' और अन्तिम शब्द 'त्र' का लोप कर देने से होरा शब्द बनता है।

जन्म काल के ग्रहों की स्थिति के अनुसार व्यक्ति के फलाफल का निरूपण इसमें किया जाता हैं। इस शास्त्र में जन्मकुण्डली के बारह भावों के लाभ उनमें स्थित ग्रहों की अपेक्षा तथा दृष्टि रखनेवाले ग्रहों के अनुसार विस्तारपूर्वक प्रतिपादित किये जाते हैं। मानवजीवन के सुख, दुःख, इष्ट, अनिष्ट, उन्नति, अवनति, भाग्योदय आदि समस्त शुभ अशुभ का वर्णन होरा शास्त्र में रहता है। होरा ग्रन्थों में फल निरूपण के दो प्रकार हैं। एक में जातक के जन्म-नक्षत्र पर से और दूसरे में जन्म लग्नादि बारह भावों पर से विस्तारपूर्वक विभिन्न दृष्टिकोणों से फलकथन की प्रणाली बतायी गयी है। होराशास्त्र पर अनेक स्वतन्त्र रचनाएँ है। समय-समय पर इस शास्त्र में अनेक संशोधन और परिवर्तन हुए हैं। इस शास्त्र के वराहमिहिर, नारचन्द्र, सिद्धसेन, केशव आदि मुख्य रचयिता हैं। श्रीपति एवं श्रीदर आदि नववीं, दशवीं, ग्यारहवीं शताब्दी के होरा शास्त्रकारों ने ग्रहबल, ग्रहवर्ग, विशोत्तरी आदि दशाओं के फलों को इस शास्त्र की परिभाषा के अन्तर्गत मान लिया हैं।[5]

जातक रत्नमाला में कहा है कि - जो परम बुद्धिमान् पाटी - कुट्टक - बीजादि गणित का ज्ञाता व सिद्धान्तग्रन्थोक्त हजारों युक्तियों का जानकार होकर भी, अनन्त युक्तियों से युक्त होराशास्त्र में कथित शुभ व अशुभ फल को नहीं जानता है वह प्रौढ ज्योतिषी भी ज्यातिषियों के समुदाय में एवं राजा की सभा में हास्य का पात्र होता है।

जातक या होरा शास्त्र

जातक स्कन्ध में राशि भेद ग्रहयोनियों (ग्रहों की जाति रूप और गुण आदि), वियोनिज, (मानवेतर जन्म फल), गर्भाधान, जन्म, अरिष्ट आयुर्दायदशाक्रमकर्माजीव (आजीविका), अष्टकवर्ग, राजयोग, नाभसयोग, चन्द्र योग, प्रव्रज्या योग, राशिशील, ग्रहदृष्टि फल ग्रहों के भाव फल, आश्रय योग, प्रकीर्ण, अनिष्टयोग, स्त्री जातक फल निर्माण नष्टजन्म विधान तथा देस्काणों के स्वरूप इन सब विषयों का वर्णन है। [6]

मेषादिराशि क्रमशः काल पुरूष के सिर, मुख बाहु, हृदय, उदर, कटि, वस्ति, लिंग, ऊरु, जानु, जंघा और दोनों चरण है। मंगल, शुक्र, बुद्ध चन्द्रमा सूर्य, बुध शुक्र, मंगल, बृहस्पति शनि तथा गुरू क्रमशः मेषादि राशियों के स्वामी कहे गये हैं।

[3] होरारत्नम 1/25,पृष्ठ सं.6
[4] सारावली अंक 2/4,पृ.सं-43
[5] बृहत्पराशरहोराशास्त्रम् Dwarkadheesh vastu.com
[6] वृहज्जातक - 2/30 पृ.सं-40

सूर्य काल पुरूष के आत्मा चन्द्रमा मन, मंगल पराक्रम, बुधवाणी, गुरू ज्ञान एवं सुख, शुक्र काम एवं शनैश्चर दुःख, सूर्य का वर्ण ताम्र और चन्द्रमा का वर्ण शुक्ल मंगल का रक्त, बुध का हरित, बृहस्पति का पीत, शुक्र का चितकबरा, तथा शनैश्चर का काला, क्षीण चन्द्रमा सूर्य मंगल तथा शनि पाप ग्रह है। इनसे युक्त होने पर बुध भी पाप ग्रह हो जाता है। बुध और शनि नपुंसक ग्रह हैं। शुक्र और चन्द्रमा स्त्री ग्रह है, शेष पुरूष हैं। गुरू और शुक्र ब्राह्मण वर्ण के स्वामी हैं, भौम तथा रवि क्षत्रिय वर्ण के चन्द्रमा वैश्य वर्ण के बुध शूद्र वर्ण के अधिपति हैं। शनि अन्त्यजों के तथा तथा राहु म्लेच्छों के स्वामी हैं।[7]

सभी ग्रह अपने स्थान से 7 वें चरण को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं इनके अतिरिक्त मंगल 4 तथा 8, बृहस्पति 5 तथा 9 तथा शनि 3 तथा 10 स्थान को भी पूर्ण दृष्टि से देखते हैं।

अपने-अपने उच्च, मूलत्रिकोण, गृह और नवमांश में ग्रह बलवान होते हैं रवि और मंगल को दशम भाव मे शनि को सप्तम भाव में चन्द्र तथा शुक्र क चतुर्थ भाव में बुद्ध और गुरू को लग्न में विक्वल प्राप्त होता है।

जिस बालक के जन्म कुण्डली में 4 या 5 ग्रह अपनी उच्च राशियों में बालक राजा होता है। यदि जन्म समय में चार या पाँच बलवान ग्रह किसी एक राशि में हो तो मनुष्य गृहत्यागी संन्यासी होता है।

होराशास्त्र का प्रयोजन

होराशास्त्र की आवश्यकता का वर्णन आचार्य कल्याण वर्मा ने इस प्रकार सारावली में किया है -

अर्थार्जने सहायः पुरुषाणामापदर्णवेपोतः।
यात्रासमयेमन्त्रीजातकमपहायनास्त्यपरः ॥[8]

मनुष्या में धन अर्जित करने में यह होराशास्त्र सहायता करता है अर्थात् शुभ दशा का ज्ञान होने पर लाभ होता है। विपत्ति रूप समुद्र में नौका वा जहाज का कार्य करता है एवं यात्रा के समय में मन्त्री अर्थात् उत्तम सलाहकार होराशास्त्र को छोडकर अन्य कोई नहीं हो सकता हैं। नारद ने भी कहा है कि

"अज्ञातजन्मनांनृणांफलाप्तिघुर्णवर्णवत्"[9]

जन्म कालीन शुभाशुभस्थिति वश से जन्मान्तर में अर्जित शुभ व अशुभ कर्म फल प्राप्ति निरूपण करने वाले ग्रह, फल की सूचना मात्र ही देते है न कि जन्मकालीन ग्रह शुभ व अशुभ फल का उन उन पुरुषों द्वारा अर्जित अनेक प्रकार के अदृष्ट उत्पन्न होने के कारण ग्रहों का शुभ और अशुभ फल को उत्पन्न करना यह निरस्त नहीं हुआ।[10] यद्यपि उक्त शुभाशुभ फल का उन उन पुरुषों द्वारा अर्जित अदृष्ट को जन्यत्व प्राप्त होता हैं। तथापि ग्रहों को फल की सूचना देने में बाधा का अभाव हैं। होराशास्त्र का ज्ञान होने पर जिसकी कुण्डली से जिस समय में अरिष्ट की प्राप्ति हो तो उस समय में अरिष्ट का निराकरण जप पुरश्चरणादि से करना चाहिए। इस जप से अशुभ फल नष्ट होकर शुभ फल की प्राप्ति होती है। जिस समय में कुण्डली से शुभ फल प्राप्त हो तो उस समय में घनार्थ यात्रा व राजा का अभिषेक आदि करना चाहिए यह तात्पर्य हैं।

होरा की विफलता

शौनक ऋषि कहते है कि - प्राचीन अर्थात पूर्व जन्म में अर्जित शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति अवश्य होती है तो इस कारण से होराशास्त्र का ज्ञान फल व्यर्थ हैं। जिस पुरुष को जो लब्ध होने वाला होता है उसका विधान स्वयं बृहस्पति भी नहीं कर सकता। जो कि साक्षात् ब्रह्मा है वह भी लब्ध होने वाले पदार्थ को नष्ट करने में या उसके विपरीत करने में समर्थ नहीं होता हैं। क्युकिं जो न होने वाला है, वह नहीं होता और जो होने वाला है वह टल नहीं

[7] भारतीय ज्योतिष पृ सं- 9

[8] होरारत्नम 1/27,पृ.सं.7

[9] वही पृ सं 9

[10] ज्योतिष शास्त्र और संस्कृत महाकाव्य पृ सं- 15

सकता। वैसी वैसी बुद्धि उत्पन्न होती है उसी प्रकार की मति होती है वही भावना जागृत होती है तथा सहायक भी वैसे ही मिलते है जैसी भविष्यता होती है। और यदि भविष्यता बदलती नहीं है तो भाग्य की प्रधानता होने से पुरुषार्थ की व्यर्थता सिद्ध होती है। यदि केवल भाग्य वश से ही कर्म की सिद्धि होती है ऐसा करने पर श्रुति स्मृति प्रतिपादित ज्योतिष्टोम से स्वर्ग की कामना होने पर यज्ञ, लक्ष्मी की पुष्टता की कामना होने पर ग्रह यज्ञ करना चाहिये ये विधि वाक्य व जहरीला मांस नही खाना चाहिये, वृक्ष पर नहीं चढ़ना चाहिये इत्यादि निषेध वाक्य व्यर्थ हो जायेंगे। यदि भाग्य ही फलीभूत होता है तो खेती के उपायों में अधिक उद्योग क्यों किया जाता है। तथा श्रुति व स्मृति भी मनुष्यों के निषेध व विधान में क्यों आसीन हैं। अर्थात् कर्तव्य का प्रतिपादन क्यों करती हैं।[11]

होराशास्त्र की प्रशंसा

होराशास्त्र की प्रशंसा मे आचार्य कल्याणवर्मा ने कहा है।

विधात्रालिखितायस्य (याऽसौ) ललाटेऽक्षरमालिका।
दैवज्ञस्तांपठेत्प्राज्ञ:होरानिर्मलचक्षुषा ॥[12]

प्राणियों के मस्तक पर विघाता (ब्रह्मा) अर्थात् सृष्टिकर्ता ने जो शुभाशुभ पंक्ति लिखदी है उसे प्रौढ ज्योतिषी ही अपने होराशास्त्र ज्ञान रूपी निर्मल चक्षु से जानने में समर्थ होता है [13]

आचार्य गुणाकार ने भी अपने होरामकरन्द नामक ग्रन्थ में कहा है कि जीवों के मस्तक पर ब्रह्माजी शुभाशुभ की जो रेखा अङ्कित करते हैं उसे प्रौढहोराशास्त्र का ज्ञाता अपनी बुद्धि से जानकर शुभाशुभ फलादेशमे समर्थ होता है न कि अन्य कोई |[14]

ज्योतिष में होरा का महत्त्व

सूर्य होरा

सूर्य होरा में माण्किय धारण करना शुभ होता है। इस समय सरकारी नौकरी के लिए आवेदन करना, सरकारी कार्य, चुनाव, राजनीति संबंधी कार्यो की पूर्ति की जा सकती है।[15]

चंद्र होरा

चंद्र होरा में मोती धारण करना शुभ माना गया है। चंद्र होरा में किसी भी कार्य को करने पर पाबंदी नहीं है। इस होरा में घरेलू काम, घर -गृहस्थी, जनसंपर्क, सामाजिकसेवाएं करना शुभ माना गया है।[16]

मंगल होरा

मंगल होरा में मूंगा एवं लहसुनिया धारण करना शुभ माना जाता है। इस समय न्यायालय, कोर्ट - कचहरी, पुलिस, सैन्य संबंधित कार्य, प्रशासनिक कार्य, घर, भूमिकी खरीदारी, व्यवसाय, शारीरिक कार्य किए जा सकते हैं।[17]

बुध होरा

इस होरा में पन्ना धारण करना चाहिए। इस समय व्यापार संबंधी कार्य, लेखाकार्य, बैंक, विद्या, शिक्षा संबंधी कार्य किए जा सकते हैं।[18]

गुरु होरा

गुरूहोरा में पुखराज धारण करें। इस समय उच्च अधिकारियों से भेंट - मूलाकात, विवाह संबंधी कार्य, नए कपड़ो की खरीदारी की जा सकती हैं।[19]

शुक्र होरा

[11] होरारत्नम, पृ सं 3
[12] होरारत्नम,1/40,पृष्ठ सं-12
[13] होरारत्न पृ. सं - 7
[14] होरारत्नम, पृ सं- 24
[15] होरारत्नम,1/44, पृष्ठ सं- 67
[16] वही पृ सं 67
[17] वही पृ सं 67
[18] वही पृ सं 68
[19] वही पृ सं 68

शुक्र होरा में हीरा धारण करना शुभ माना गया है। इस समय सोने - चांदी के व्यापार आभुषण खरीदना, कला क्षेत्र में कार्य, मनोरंजन, साहित्य, नए वस्त्र धारण किए जा सकते हैं।[20]

शनि होरा

शनि हेारा के समय नीलम और गोमेद धारण करना चाहिए। इस समय गृह प्रवेश, नए कारखानों की शरुआत, मशीनरी संबंधित कार्य, वाहन की खरीदारी, न्यायालय, कृषि, तेल संबंधी कार्य किए जा सकते हैं।

क्या होता हैं होरा लग्न

वैदिक ज्योतिष के अनुसार यदि लग्न में विषम राशि हो और लग्न का मान 15 अंश तक हो तो होरा लग्न सूर्य की होगी। ऐसे ही यदि लग्न में विषम राशि हो और लग्न का मान 16 अंश से 30 अंश तक हो तो होरा लग्न चंद्र की होगी। अगर लग्न सम राशि में हो और लग्न का मान 15 अंश तक हो तो होरा लग्न चंद्रमा की होगी।

होरा कुंडली से फलादेश

व्यक्ति के जन्म कुंडली की गणना होरा के आधार पर की जाती है। जातक का जन्म सूर्य होरा या चंद्र होरा में ही होता है। दिन के समय जातक के सूर्य शुक्र और बृहस्पति पर ध्यान दिया जाता है क्योंकि इन्हें मजबूत ग्रह माना जाता है। वहीं रात के समय चंद्रमा, मंगल और शनि देखा जाता है क्योंकि ये ग्रह रात में ताकतवर होते हैं। जन्म के समय के आधार पर बुध का प्रभाव अलग होता है। यह सूर्यास्त या सूर्योदय के समय शक्तिशाली होता है। जन्म का समय अलग होने पर इसका प्रभाव सामान्य होता है।[21]

किसी भी मनुष्य का जन्म 12 राशियों में से किसी एक में होता है। वृष कर्क कन्या वृद्धिरक मकर और मीन राशियों के जातक रात्रि होरा के होते हैं। इसका स्वामी ग्रह चंद्रमा होता है। वहीं मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुंभ राशि के जातक दिन होरा के होते हैं। इसका स्वामी ग्रह सूर्य होता है। कर्क राशि की होरा में सभी सौम्य ग्रह स्थित हो तो इसके फलस्वरूप जातक सौम्य स्वभाव का संपत्तिसे अभिभूत और सुखी जीवन यापन करता है। इसे उलट अगर कर्क राशि की होरा में सभी क्रूर ग्रह स्थित हो तो जातक निर्धन दुखी और बुरे कर्म करने वाला होता है। यदि सूर्य राशि की होरा में सभी क्रूर ग्रह स्थित हैं तो जातक साहसी और धन-दौलत से परिपूर्ण होता है। अगर सूर्य और चंद्र की होरा में सौम्य एवं क्रूर ग्रह दोनों विधान हो तो जातक को मिले जुले परिणाम मिलते हैं। इन्हीं के आधार पर होरा सारणी तैयार की जाती है।[22]

जातक के भेद

ताजिक, मुहूर्त, प्रश्न, जातक एवं शकुन ये जातक स्कन्ध के भेद है। ताजिक खण्ड में ताजिकनीलकण्ठी, हायन रत्न आदि। मुहूर्त खण्ड में मुहूर्त चिन्तामणि, मुहूर्त गणपति, मुहूर्तमार्तण्ड, वृहद्दैवज्ञरंजन आदि एवं प्रश्नखण्ड में षटपंचाशिका, आर्या सप्तति, प्रश्नविद्या, प्रश्न शिरोमणि, जातक स्कन्ध में लघुजातक, वृहज्जातक, जातकालंकार, जातकभरणम्जातकपारिजात, एवं शकुन में प्रश्न शकुन, शकुन विद्या आदि ग्रन्थ विशिष्ट रूप में है ।

जातक स्कन्ध के अन्तर्गतराशिशील विवेक, नक्षत्रगुण विचार, द्वादशभाव फल विचार, दशवर्ग चक्र निर्माण, दशान्तर्दशा विचार, ग्रहावस्था विचार, अष्टवर्ग व गोचर विचार, सुदर्शन चक्र विचार, द्वादश लग्न विचार, ग्रहभाव फल विवेक, विविधयोग, ताजिक प्रकरण, संस्कार प्रकरण, विवाह संस्कार विचार, वास्तु प्रकरण, यात्रा प्रकरण, मुहूर्त परिशेष प्रकरण, प्रश्न प्रकरण आदि विषयों का अध्ययन किया जाता है। यद्यपि जातक स्कन्ध का अत्यन्त विस्तृत क्षेत्र है,

[20] वही पृ सं 69

[21] होराशास्त्रम - 1/45, पृ.सं-76

[22] वही -पृ सं 77

तथापि यहाँ हम जातक स्कन्ध के महत्वपूर्ण विषयों का उल्लेख करते है।।[23]

ज्योतिष शास्त्र के तीनों स्कन्धों का लक्षण

जिस स्कन्ध या विभाग में त्रुटि से लेकर प्रलयकाल तक की गई गणना हो, सौर, सावन, नक्षत्रादिमासादिकालमानों का प्रभेद बतलाया गया हो, ग्रह संचार का विस्तार से विवेचन किया गया हो तथा गणित क्रिया को उत्पत्ति द्वारा समझाया गया हो, पृथ्वी, नक्षत्रों व ग्रहों की स्थिति का वर्णन हो तथा ग्रहसाधनादि में उपयोगी यन्त्रों व उपकरणों का विवरण प्रस्तुत किया गया हो, वह सिद्धान्त कहलाता है। इसी का दूसरा नाम तन्त्र भी है। जिसमें भूलोक, अन्तरिक्ष, ग्रह, नक्षत्र ब्रह्माण्ड आदि की गति, स्थिति एवं लोकों में रहने वाले प्राणियों की क्रिया विशेष द्वारा समस्त लोकों का समष्टिगत फल बतलाया गया हो, उसे संहिता कहते है। वराहमिहिर ने कहा है कि जिसमें समस्त ज्योतिष विषयों का सर्वांग वर्णन व उनका प्रभाव निरूपित हो, वह संहिता है- तत्कात्स्न्योर्पनयस्य नाम मुनिभिःसंकीर्त्यते संहिता। जातक शास्त्र को जानने वाले दैवज्ञ या ज्योतिषी के लक्षण व दोषआचार्य वराहमिहिर ने अपने ग्रन्थ वृहदसंहिता के सम्वत्सर अध्याय में ज्योतिषी को कैसा होना चाहिए स्पष्ट किया है- दर्शनीय, नम्र, सत्यवादी, परच्छिद्रान्वेषण विरत, राग, द्वेष रहित दृढपुष्ट शरीर श्रेष्ठ शुभलक्षणसम्पन्न, हाथ, पैर, नाखून, आँख कान दाँत मस्तकशुभ लक्षण सम्पन्न गम्भीर उदात्त विचारों से पूर्ण ऐसे दैवज्ञ से किया गया भविष्य विचार सही एवं शुभ होता है।[24] पुनश्च समाज एवं सभा में सुन्दर वक्ता, प्रतिभा सम्पन्न देश काल की गतिविधि से पूर्ण परिचित, से शुभ निर्णय प्रतिद्वन्दियों में विजयी, चेष्टाओं का ज्ञाता दुर्व्यसनों से रहित वेद शास्त्रों का ज्ञानी तथा उनके अनुष्ठानिक उपयोगों में निष्णात एवं आस्थावान, मारण, मोहन, उच्चाटन, विद्वेषण, वशीकरण स्तम्भन आदि विद्याओं का ज्ञाता, व्रतोपवास, देवपूजा, श्रोत स्मार्तकर्मानुष्ठानरत, समाज में प्रभावोत्पादक, प्राकृतिक अशुभ उत्पात, भूमिकम्प, आंधी तूफान आदि अनिष्ट समय का ज्ञाता तथा इनसे समाज को मुक्त करने की सद्विधाओं का मर्मज्ञ होते हुए ग्रहणादि संहिता होरा शास्त्र में मर्मज्ञ ज्योतिषी से ही समाज एवं राष्ट्र का कल्याण हो सकता है।

संदर्भ-सूची

1. होरारत्नम् - चौखम्भा प्रकाशन प्रथम अध्याय
2. होराशास्त्रम चौखम्भा प्रकाशन –
3. वृहज्जातक - चौखम्भा प्रकाशन
4. लघुजातक - चौखम्भा प्रकाशन
5. सारावली - चौखम्भा प्रकाशन
6. भारतीय ज्योतिष : नेमिचन्द्र शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ चालीसवां संस्करण : 2005
7. ज्योतिष शास्त्र और संस्कृत महाकाव्य : ब्रजेश कुमार मिश्र क्लासिकलपब्लिशिंगकम्पनी नई दिल्ली प्रथम संस्करण - 2008
8. बृहत्पराशरहोराशास्त्रम् Dwarkadheesh vastu.com
9. भारतीय ज्योतिष : नेमिचन्द्र शास्त्री, भारतीय ज्ञान पीठ प्रकाशन, अष्टम 1978, नवम संस्करण 1989
10. ज्योतिष - रत्नाकर, देवकीनन्दन सिंह, मोतीलालबनारसीदास, प्रथम संस्करण - 1934
11. होरारत्नम, मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलालबनारसीदास, प्रथम संस्करण 1979 पृष्ठसंख्या -

[23] लघुजातक - 1/23 पृ.सं- 56

[24] भारतीय ज्योतिष पृ सं - 32